अनुमोदन

कथैत्य गुरुदास को प्रभास मेघवास, हिन्दी विभाग, भोजपुरी-नारायण बादशा वसूल, दुरारा निम्नित्त यह शोध अभ्यास "हिन्दी कृष्ण कथा में उदासन" शीर्षक के पूर्व में प्रकाशित किया जा रहा है।

उदासन भान लोकसूत्र के द्वारा प्रभास को पिण्ड में देखने का क्रिया करता है। यह भौति तथा अवश्यक अवस्था में बाल महावेतन के साथ सब्ब के में स्थान हो जाता है। प्रभास, प्रभास तथा प्रभास, वह सरी धारत वसूल को स्वाभाविक धारत करते हैं। नाम-पुराण में दशपुर देशमुख जयेश तत्त्व भी है, जो धारत है। भारत के प्राचीन सभ्यताओं में पाये जाने वाले सम्पूर्ण तत्त्व को निर्देश करता है। भारतीय धारत भी बहुत समान तत्त्व की साखर किया गया है। भारतीय धारत में उदासन नाम नहीं में समान भौति पूर्ण है।

नाम पुराण जगत से समान बने पर भी रस-पूर्ण होने से अभ्यास के शब्द और उसमें भी भारतीय शास्त्र को नत-नव ती प्रमाण आकर्षित रहता है। वह-प्रक मिलें जानिए वह, उसे ही उसके नाम शास्त्र के विरूद
वे निम्नान्वित किया है और इसीमें बड़ी-बड़ी वास्तविक तथ्यें हैं, इसी रक्षन की वात-वात भीषण किया है। विषय साधनमें बड़ी-बड़ी वास्तविक तथ्यें हैं उनके साधन समागम क्षण है। हेतु इस का वाक्य है, ध्यान की भी है कह कहते हैं। यद्यपि बड़ी-बड़ी वास्तविक तथ्यें नहीं देखता, उस साधनमें साधनिक उन्मुख वात-वात भी हैं। इसी साधनमें अंतर्दृष्टि भी भावजान ने वात-वातित की। और बड़ी-बड़ी वास्तविक साधन के हेतु समागम है उपलब्ध किया है।

न यदुराहरीजसदियौं बड़ी-बड़ी जगाविन्त्र गुणारूप वादित कालपदु्
तदुराहरू तीर्थिकृति मानसा न यज्ञ वेदता निरमनस्यविषयः ॥

- हृदिकुल, 1/3/10

'हिंदी कुंवर-कवाय' प्रकुट शीर्ष प्रलोक का विषय है।
जैसे भूमि में कृषि के प्रति बड़ा करते हैं, वैसे ही कुंवर-कवाय में ही वेदान्त राजनीति के भाव निरूपित किया है। दरी साधन को उनके साथ जीतता है, जैसे कि ग्रह देवता साधन के साथ जीतता है, इंद्र जग साधन के साथ जीतता है। हिंदी कुंवर-कवाय की यात्रा की गाथा कथा है अत्यधिक तत्काल आदिवासी है। 'कुंवर-साधन' के रूपमें पर वर्ष पूर्व में तत्कालित किया है। एकाएक साधन के साथ-साथ वे ग्रह भी हैं, पूर्ण पूर्वांशलीय भी हैं। विज्ञान नाना विद्वान आजमे के पूर्व में वस्त्र वादता है, वैसे ही बड़ी-बड़ी वास्तविक कुंवर साधन में आजमे के पूर्व में राष्ट्रभूषण ग्रह वस्त्रें वादता है। उक्तकि विवेक भी माना प्रभाव प्रतिपाद्य है।

बड़ी-बड़ी वास्तविक कुंवर साधन में कुंवर की ग्रह पूर्व मानक बिज्ञानिक वातिते में जिन-जिन पूर्व में उनका निरूपण किया है, उनमें ही विवेक भी मानक वातिते में कुंवर-साधन के विवेक-भावित स्वरूप वेदान्त विवेक निरूपण पर विचार किया है।
'राजन' भारतीय समाज का ही नहीं, अपि भारतीय संस्कृति का मैर्फैंड है। उभे पुनि को कस्त गहराओं में असङ्ग जलसित प्रवाहित हो रहे हैं जो वे ही जीन है अभार है। उन्हें ही राजन के अल्लानात: प्रोत्साहन भारतीय जीन स्थल वर्तमान है अभार है।

पूर्वत धीर प्रथा की भारतीय दर्शन भी संक्षिप्त है। भारतीय दर्शन गुणयोग: दो पूरी में विकिरित हुए हैं, नातिविद दर्शन और आलिंकु दर्शन।

नातिविद के ताल्सम है जब जन न जगन्निवास चारिव, तारा- तारा, तारानात: नामात: असङ्ग एवं बौद्ध वे ४: दर्शन नातिविद हैं।

आलिंकु दर्शन वैज्ञान में विकिरित रहते हैं। दूसरे ताल्सम है, जानी वेदों की सोलमार, जायस्म ग्रंथ, आध्यक हंस स्थ उपनिषद। उपनिषदैवत साहित्य है आलिंकु दर्शन के अभारा ग्रंथ हैं। नातिविद एवं आलिंकु दर्शन दो शब्द है, वह आर्थ कथण नहीं होता चार्कि द्व तथिहरुसर्वात है ती दूसरा वेदार्थ दर्शन।

आलिंकु दर्शन भी ४: है। वायु-विवेचक सहित-मंत्र एवं पूर्ण वेदार्थ- उत्तराणवाच। एवं ४: दर्शन में विचार करनी को दृष्टि है एवं विवेचन के प्रतिवादन की दृष्टि के दोनों दर्शन एवं दूसरे दो संक्षिप्त है। क्योंकि वायु एवं वेदार्थ, सोलमार, जायस्म ग्रंथ, पूर्णमंत्र एवं उत्तराणवाच। पूर्ण मंत्र का एक्ट्र वाच्क वर्तमान वर्ष वाच्क के साथ है ती उत्तराणवाच का एक्ट्र जैविक अन्वय है साथै। उत्तराणवाच दर्शन की हो वेदार्थ दर्शन के नाम है जीविक मिश्च भोज है।

'वेदार्थ दर्शन' भारतीय आलिंकु दर्शनी में समाप्त पहलू है।

क्या दर्शन का जीवन पूर्वत दर्शन का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर अवश्य दर्शन है।
अधिक पड़ा है। रहते प्रभाव है काय भी अकृति नहीं रहा है। हिन्दी में जो वृक्ष-काव्य विद्यापति के लेख करना बधाई तक निर्मित हुआ है उस पर प्रश्न दर्शन का प्रभाव है।

प्रश्न शीर्ष-प्रक्षेप का विषय हिन्दी वृक्ष-काव्य में वेदान्त है। यह तो सर्वाधिक है कि हिन्दी के प्रमाण तीन अत्यधिक काय के अलग-अलग कृष्ण हैं। कृष्ण का हिन्दी कवियों ने विज्ञ रुपों में विज्ञ लिखा है। बहुत देश गुरार के अलग है तो बहुत भारत के तो बहुत भारत है।

हिन्दी वृक्ष-काव्य का सम अथवा दर्शन दर्शन है यह तो सम दें हो दें अथवा जी हो जी जाता है कि बहुत गहराई में अथवा सम दर्शन की धाराओं से वह संयुक्त हुआ है। लगी हिन्दी कृष्ण कवियों के काय में नहीं तो कृष्ण कवियों के काय में तो यह तथा बहुत ही समान पूरा है लक्षित हो जाता है।

'हिन्दी वृक्ष-काव्य में वेदान्त' शीर्ष-प्रक्षेप का विषय मध्य-महत्या-रूप में हिन्दी कवियों तक को प्रभावित रही गई है। विशालपुर्ण विचार किया जाए तो हिन्दी में शान्तिक पूरा-कृष्ण है, परन्तु प्रश्न-प्रक्षेप में उन्हीं विकासों का अथवा का विषय काय गया है, हिन्दी काय में समान पूरा है वेदान्त के तरह निरूपित हुआ है। अथवा तो जो काय में पुराते भी महत्या-पूरा है।

'वेदान्त' का शास्त्रिक अर्थ है, वेदी के परातु, वेदी के भीतर भाग के वचने उपनिवेशों का निर्माण हुआ। अत: वेदान्त है उपनिवेशों का ग्रन्थ ही है। 'वेद' ग्रन्थ की भी वजह है तथा 'अल' के ताल्लुक के निर्माण। यह प्रकाश जिसमें ग्रन्थ का निर्माण हो, वह भी वेदान्त बनाता है। प्रथमाध्यक्षों के अन्तःर्गत ग्रन्थ, उपनिवेश एवं गीता द्वन तीनों का समावेश भी है।
किया गया है। वे लौटी वेदांत के अभाव है। श्रृंगधुत अदरावण घास
निर्मित वेदान्त पर किवे गये सुझ है। परवर्ती आचार्यों ने वारदातन कूट
श्रृंगधुतों पर अनी-अनी दृष्टि के वायु विशे ओर फलत्र विनिमय
वेदान्त मत अवधारण में जाए।

हिंदी कुण्डांका पर किवे न किवे दूसर में उपजुलित वेदांत के
संक्षेप वास्तविक लंघनकायों का प्रभाव पड़ा है। वे हिंदी कुण्डांका पर स्वाभाविक
प्रभाव शुद्दातृत वेदान्त का पड़ा है। शुद्दातृत वेदान्त के प्रश्नत आचार्य
वल्लभ ने वहुशिष्ठों द्वारा स्थापित वेद्य विवाह के धार्मिक घोषणा की। वे इसी हिंदी कुण्डांका अनुसार अवधारणा के अनुसार
किवे न किवे सुझ हुए। अवधारणा की आधार है। वेदांत के विवेकों के आधार में शुद्धता शुद्धातृत वेदान्त का
किवे न किवे सुझ हुए। वे साध्यता विवेक के आधार में शुद्धातृत वेदान्त के अवधारणा
के अनुसार वेदान्त किवे न किवे सुझ हुए।

प्रस्तुत शौचप्रोक्त में उन सभी महत्वपूर्ण कवियों के आधार पर
विवाह किया गया है, जिनमें शुद्धातृत वेदान्त के अवधारणा के
किवे न किवे सुझ हुए।

प्रस्तुत शौचप्रोक्त छात्र अध्यायों में किवल है:

1) प्रथम अध्यायः धृष्ट-कृणभवत
2) वितरीय अध्यायः हिंदी कृणभवतः स्वति स्वति बुधितम।
3) त्रूणिः अध्यायः नाना स्वति वेदान्त।
4) चूत्तिः अध्यायः अवधारण के अवधारणा में वेदान्त।
5) परम अध्यायः अवधारणा के अवधारणा में वेदान्त।
6) भगवान अध्यायः हिंदीत्तर प्रदेश के हिंदी कृणभवतः में वेदान्त।
7) उप एः वा र।
प्रथम कथावृत्ति: में तथा प्रथम कृष्ण चरित के विश्लेषण पर विचार किया गया है। वह समय कमाई का यही कृष्ण का चरित है, वह निःस्वादृढ़ पुप से कृष्ण नाम वाची स्वाधिक मशालुकों का आभासित पुप है। तथा सारण से मिलने के पूर्व तब जादुई गंगावरण का आत्मा है। तथा नदी-नदीयों के मिलने के वह परिपूर्ण बी जाती है। वैसा ही कुछ कृष्ण-चरित के लेखक में भी कुछ है।

कृष्ण का अलंकार तथा उपादेश में जन्मी तथा भक्ति द्वारा संबंधित हुआ है। कन्या अग्नि के लिए कृष्ण स्वागत रस के आलंकार है, राधा नामक है, जार से, गीर्जावन बलभ है, राधा बलभ है, तो योगियों के अलंकार में तथा व्रजम द्वारा अनुपूर्णे के विश्व वर्तन बालम है, भावानु है, भागवान है।

कृष्ण चरित वेदान्त का ही भूमिगुरु है। मित्र वी स्त्री-स्त्रियों से भी अधिक बल के बस रियाद, विभाजन ने भारत के आधारित एवं भौतिक दोनों क्षेत्रों की समान पुप से अभिलंक राम है। भारतीय वातावरण में उद्देश्य से केवल अनुडुर्गति तथा कृष्ण चरित विशेषता वेदान्तकों की भूमि बालम है। वैद, उपनिषदः, उपाध्य, वेदोत्त, पाथिक, पारम्पुर, आश्रम, बिन्दु रमण ज्यादा अध तथा आर्द्रात्म भावायों में कृष्ण का विवरण निपुण भिता है।

कृष्ण का नाम अग्नि के प्रथम, अकट्ट स्त्र अंगुलि तथा अंगुलियों में विनय-विभाजन विद्यालय में भिता है। यह कृष्ण आगिरस सर्वश्रेष्ठ भवन है। बैठक वातावरण के लोगों का यह निर्देश मात्र है कि आगिरस सर्वश्रेष्ठ भवन के वैदिक पश्चिम देश वाराणस है। मेघ अंगुलियाँ विस्तार है। आगिरस मंत्र गायकShapes के पश्चि अंगुलियों विस्तार मात्र श्रवण है। यह तथा वास्तव कृष्ण निरूपन का वृन्द शब्द का वृन्दल है अंगुलि से स्पष्ट हो जाता है: 'श्रवण-विपन्न, यो परीक्षा पवित्रता सः श्रवणः'
सबी पारंतु उपनिषदें, आर्यक एवं आर्युपण अर्थों में भी कुण का
उलेख मिलता है। सामग्री के एकमात्र उपनिषद ‘वाणिज्य उपनिषद’ में देखी<
पूर्व कुण का उलेख है। जो जीगरा के पूर्व भी केवल है। भी जीवन ने
देखी पूर्व कुण की जो उपेता दिया है, गोता के उपेदा के साथ उसकी तुलना
की जा सकती है।

पृष्ठीन देवीपोषित प्रेमों में ‘महाभारत’ महतवपूर्ण है। सत्य रचना
काल 350 से पूर्व माना गया है। इस में द्वारिकावासी एवं पादव मित्र कुण
का उलेख है। सूर्यवंश विषारी, गोविंदसंग कल, रामायणम अलकृणा का भी
भी उलेख नहीं है। कहाँ काव्य क्षीरकों ने सूर्यवंश में शूर्गार लिया करने
वाले कुण के विज्ञान को वशिष्ट आत्मा अला वर्ण अनुभावित माना है। कई
क्षीरकों’ ने ती वर्षों तक कह दिया है कि कुण के चरित्र में शूर्गार लिया की
वलना को भिक्षान्वित करिन धार्मिक और भास्क आधार बन थे।

महाभारत के पारंतु, दुराराज्य आया। भार्तर में कुण की बल
एवं शूर्गार-लियों का अत्यधिक वर्णन मिलता है। इसी आदि कई पुराणों में
कुण की शूर्गार-लियों का वर्णन है। संगीत, पाद, अल्पक्रम पदार्थ विभिन
भाषाओं में कुण जीवन को वर्णित है। ‘गोविंदाद्वि’ और ‘वृंदावन शूर्गार
लिया’ विद्वेष शूर्गार रस का प्रमाण है। उसी का प्रभाव कहि विदुःपातिः पर पड़ा
है। इसी पारंतु, अद्वाक्ष एवं शोक आदि काव्यों में कुण की लियों का वर्णन
किया है।

यदि बाप यह सम यह देना चाहिए है कि कुण के जिस चरित्र में
वेदान्त के तत्त्व निरपेक्ष मुह है, जहाँ दुराराज्य का गोविंदसंग कल, रारायण,
द्रुमाकुराविषारी, रात्रिलिता द्रिश्य कुण है, जो क्षीरकों की पृष्ठीन वशिष्ट है।
कुंश चरित को प्रमाणित्वा पर विचार करने के पश्चात्, सही
अध्याय में कुंश भक्ति के सिद्धांत पर भी विचार किया गया है। कुंशभक्ति
नाम परवर्ती है। कुंशभक्ति नाम वाद्यदेव भक्ति, लक्ष्मण भक्ति, नारायणीय
धर्म वा पारंपारिक मत है। प्रत्युत्त अध्याय में कुंशभक्ति को विवाद और दास
पर विचार किया गया है। कुंश नृत्याधार भी अभिनव में मिलता है। 'विश्वा'
नाम देवता अभिनव में है। है हो विश्व चलकर जलिए यह कथयित्व के पूप में
पूर्ण हुए। 'नमकर्त' के 'नारायणी उपायांम' में भगवत धर्म है के प्रभु
देवता के पूप में पुजे गए हैं। हैके परवर्ती, सही कथीत पारंपारिक मत भी
अभिनव में आया। भगवत धर्म वर्णित ग्रांति है। पाणिनी वे हो विश्व चलक
अभिनव के प्रभु निर्देशित है। भगवत धर्म का हो पुराना नाम वाद्यदेव धर्म है।
लक्ष्मण का भगवत धर्म नाम को पूरा हृदय, तीनारियां शताब्दिय में प्रचलित ज्ञाता।
लक्ष्मण प्रथम वह धर्म शुरूने निराकार शासन भक्ति तक ही प्रचलित था। ३० दुर्ग, पूर्ण
शुरू हो, तीनारियां शताब्दिय में जब शासन भक्ति ने भाषान्तरण किया तब यही
दुर्गम धर्म भारत के पारिवर्थी भूमिका को जीर्ण भी प्रचलित हुआ और शुना के
लोग भी ही अपनाने लगे। लक्ष्मण भाषान्तरण की प्रक्रिया में भाषात्मक धर्म लोग
दक्षिण भारत में वोल्वित तथा श्री: शाली: दक्षिण भारत में भी कैल गए। जगे
चलकर लक्ष्मण में संबंध वर्णविधाय अभिनव में आए। विभार मुक्ति विधाय,
तैयम्य विधाय, राजस भव्य विधाय, हरियाणी विधाय स्वयं द्वारिणी है।

द्वितीय अध्याय :
न हिन्दी कुंश वादियों के अभिनव स्वरूप चुनित
पर प्रभु दक्षिण गया है। प्रत्युत्त अध्याय में
उन्ही कथाओं को विचार किया गया है, जिनके वाच्य में विशेष एवं है वेदान
के तत्त्व निर्देशित कुर रूप है।
हिंदी में कृष्ण-चारी धारा का प्रारंभ वीरगाया कहनें बहुत दिशायत है हो मना बात है और यह धारा भविष्यच, रीतिक और अन में ज्ञातिक बाल तक अर्थपूर्ण में प्रवाहित ढूंढ़ की जाती है।

अद्वय से कवियों के साहित्य में शिक्षा: बैद्यत है तत्व हिमले है।

तत्: अद्वय से आगों कवियों के भूमिका वर्तमान क्षेत्र पर वर्तमान प्राप्तकाल बाल गया है। सूरदास के सब व्यासों में मूर्द्ध है और उनका कृष्ण धार्मिक भी शहीद की भावि वायु वर्तमान है। विषय दूरदर्शी है सूरदास के बीच पर विचार करने के व्यवहार अनुभवित मीठा के फलोपूर्ण दूर की जो रचनाएँ।

महत्त्वपूर्ण है विषय की दृष्टि है उनका वितारणीय विशेषण प्रकृति किया गया है। दूर के ग्रीष्मी 'पृथक्कार' के अंतिम दूर धारकी' एवं 'साभिवर्षी' भी महत्त्वपूर्ण यथा ग्रामीण रचनाएँ है। 'पृथक्कार' एवं 'सूरहालो' वे दो रचनाएँ मीठा विषय हैं पर 'साभिवर्षी' नामक नैतिक मीठा का ग्रीष्म बने के कारण जहां शृंगार रस का प्रभाव है। जहां दूर ने 108 व्यासता एवं कवियों का वर्णन किया है। वर्ष कवि ने अच्छा शृंगार रस का वर्णन किया है, जहां उसने प्रचुर शैली में पद व्यवहार की है।

वाक्य में दूर ने विश्रांग रस की रूप है, उसके उपरिन पूर्ति प्रवाह की है। भूल को पिय यह शृंगार जो, वाक्य जो, अद्वय हो वा विश्राम जो।

दूर एवं बस्त्र शृंगार एवं वाक्य कर्म में महत्त्वपूर्ण रूप है, वैद्यकों वे भूमिका में भी। दूर के अंतिम अद्वय से कवियों में निर्देश, परमाणु-शक्त भी महत्त्वपूर्ण है। उनके विषय एवं विशेष पर विचार करने के साथ-साथ अद्वय के शैली कवियों पर ही भाविति विचार किया गया है।

अद्वय एवं अंतिम शिव कवियों की हमें अध्ययन का विषय बनाया है उनमें मीठा का अथवा अथवा शिव भक्ति महत्त्व है। मीठा के संबंध में भिन्न-भिन्न
विद्याओं ने मिन-मिन मत प्रस्तुत किए हैं। हमने प्रथम आर पियां के द्वितीय शैतियक संध्याकाल प्रथा ‘वीरविनाद’ के अध्यापक पर नीरां के व्यक्तित्व पर प्रभाव बात है। लिखनी वह मात्र के अध्यापक पर यह भी बाल किया है कि हमारे कृष्ण को मृत्यु में ले जाने नहीं दें, अंपुता है अमृत वाण में यहीं गर्भ और राजनीतिक दुर्ग से उन्मूलन कर दूर कर दूर करते हुए गुरुसार के यह व्यक्ति तो उनके ‘भक्तिवाद’ के कृष्ण एवं गविनोजी के तत्काल तुलना करने वो वाण है।

स्त्री ज्ञान में साजन, भारती, वरंगह, वननाथवाल रामकाँ, मैकेनिक्याण गुणद्वार द्वार विवाहकार निम्नक्रिय वर्तन वृक्षण पर भी विचार विचार किया गया है।

उपरुपुल कवियों में बखु वननाथवाल रामकाँ का अपना रव विशेष वाण है। रामकाँ का प्रमाणित परिपत्र में दूर्दम ‘विवाहकार’ एवं न्या गाथा है, जिनमें कल्य एवं वेदांत दोनों का महत्वकाल दृष्ट दर्जा है। ज्ञान का भाव

स्त्री ज्ञान में साजन, भारती, वरंगह, वननाथवाल रामकाँ निम्नक्रिय वर्तन वृक्षण पर भी विचार विचार किया गया है।

राजपति वैविक्षाण गुण बुधवा क्रिया दृष्ट दृष्ट हैं। उनके 'द्वार' में विहिनसंद वेदान्त के तत्क्षेत्र शिष्य हैं। हमी ज्ञान का अपने

लील अध्याय: में भारतीय वेदान्त के भविष्य व्यक्ति एवं उसकी भारतीय पर विचार विचार किया गया है। भारतीय व्यक्ति

दी भारतीय में विचार है - नारिक एवं जालिक। नारिक के तत्क्षेत्र वेदों में विशाल का आभ, जालिक के तत्क्षेत्र वेदों में विशाल। नारिक
दान के ब्रज& हैं - चार्चिक, माध्यमिक, योगाचार, शोधनमिक, जैन स्वतंत्र।

आत्म दान के भी ब्रज& हैं - याय, वैश्यिक, वैद्य, योग,
पूर्व मेंभाला वर्त मेंतामाला।

उत्तर मेंभाला की हो वेदान्ताना नाम देव अभिमा गया है। वेदान्ताना
उपाय ने 'ब्रजमुख' नाम के वेदान्त हैं संभव सुत्र लिखे है। वेदान्ताना उपाय रचित
ब्रजमुख, जीता भाषावद गतिवर्त उपायमाद मे तीनी मिल्कन प्रथामनज़ा बियास है।

वेदान्त का भूम प्रवतियान्त्र ब्रजमुख है और ब्रजमुख स्वयम्भू ज्ञान है
निश्चित विकास है। 'शृंगत, विधत निराक्षरसमक्ष विषयनमभवति'
आत्म ही वृद्धि विद्वान से है, सर्व भाव है, वर ब्रजमुख है। जी पिघला, काल
आदि ही पर है और पिघला, काल भी जिलें है, जी अखा वही स्वरूप रवचन हैं -
अंत वेदनामात्र पूर्व है, जो स्वाधिक वह लार है। वैश्वविय विषय भी स्वाधिक
विषय हैं, पर वह 'योगा' है - सार-चाहर ते गाड़ि रक्ष देह उजाय।

प्रसीत लार तो ब्रजमुखति है।

प्रसीत श्रीभज-श्रीम का प्रसीत प्रवतियान्त्र भूम भक्ति काव्यों के अनुभूतियों
का सार पूर्व भूम है। 'शृंगति वेदनानाः।'

उसी भूम की वेदान्तान्यों ने ब्रजमुख कहा है एवं 'कृष्णम भगवान भव'।
भूम नया परवाल हैं। उम्मीद तय लिए करने के उद्देश्य हैं ही जीव-अतिंत का
भवत्ता किया है। हिंदी भूम-विषयों ने ब्रजमुख के सती लेखा भवत्ता को अनुगत
वायु का बिस्माह बनाया है। जब: भूम लेखा निष्क्रिय काव्यों की अनुभूतियों एवं
अभिव्यक्तियों भी वेदान्त हैं ग्रेट से शान्त नहीं है। जैसे जोघर भंडार का पात्र कर है
भरा हो तो उसके अनु-अनु मे वल भाव है, वैसे ही हिंदी भूम-वाच्य मे भी
वेदान्त के तत्त्व आत्मा है।

'यजुर्वेद' पर निर्मित अवायों ने भाव लिखे हैं और अपने-अपने वेदान्त से संबंध राजत्र मतों की आपणा की है। वे निम्नलिखित हैं:

1) अमृतवाय (मावाय) - आचार्य शिवाजी
2) विभिन्नांत्यवाय - आचार्य गायनुब
3) द्वीतियवाय (सूत्र द्वीतियवाय) - आचार्य मथ
4) द्वीतियांत्यवाय - आचार्य निक्षेप
5) सूत्रांत्यवाय - आचार्य विन्दु शामी एवं आचार्य वलम
6) अद्वित्य भोजपेड, गौड़ीय संप्रदाय से संबंध दशानीक मत

उपरोक्त सभी वेदान्त मतों पर वह अक्षाय में प्रभाव भरता गया है।

व्यक्ति प्राण: सन्तो का निर्प्रभ भिन्न न किसी पुरुष में कृष्ण-काय में हुआ है। यदी सूत्रांत्यवाय वेदान्त के तत्त्व हिंदी कृष्ण-काय में स्वाभाविक, सिद्ध हैं। व्यक्ति अचार्य वलम से संबंध द्वीतिया आप्रवाय का सम्बन्ध कृष्ण-काय हुआ द्वीतीय वेदान्त दार्शन में संबंध है।

शास्त्र वी वेदान्त का कौ प्राण तो उसके आरा का लोपण दार्शन है।

भास्त्र में किसी न किसी दूत में कर्मवाद रहता है। पर दार्शन तक पहुँचते-पहुँचते साधन व भाव व भल है खासगार लय क्रियाशिल उनमें अनैतिक लिखा हो जाता है।

प्रभाव के होपण पर गंगा-गुरुप द्रव आता है तो आता है पर अर्ध सती है नहीं।

सर्वस्वती कन्त: चलिता है। वै ते हो सारुष भास्त्र है पर दार्शन तो कन्त: चलिता सर्वस्वती की भास्त्र रखनकार्य ग्रहण के प्रति जीवित गुरु यात्री है। नदी ऊपर व दूधी दिवारा देती है, पर जाना से सख्त नहीं कन्त: दिवारा देते है।

वै मे जो भल अक्षाय की अधिक गहराई में उतरता है तब उसके दूर भी दूर की सख्त नहीं कन्त: दिवारा प्रवाहित होने लगती है। गीता में भी साप्त रहा गया है कि लही में जानी के नहीं दूर जान करनी में केवल है।
भारत के संस्कृति मूलतः आधारित है। फलतः धर्म, समाज, नीति, कला, आदिवासी कसी का मूल क्रयांस भूमि में निरहुत है।

भारत के जातीय में वेदान्त दर्शन वास्तविक महत्वपूर्ण है। वेदान्त का तात्कालिक है वेद के पश्चात्। उपनिषद्द आण्याक, ब्रह्मण आदि वेद के पश्चात्, अन्तिम में जाते हैं। ब्रह्मण ग्रंथों का एकदम पूर्व मूलिक वे साइंट में जाते हैं, क्योंकि उनके क्रयांस का निरुपण हुआ है। पर उपनिषद्द स्त्री आग्नेय स्त्री संबंध का जान है अंत: प्रथा है।

वेदान्त के आधार हैं। उपनिषद्द सभी वेदान्त से जोड़े हैं। आदरक्ष्य आधार ने उपनिषदों में की तत्त्व वैद्य, जीवन, ज्ञान, विषयक विचारों की अपने ब्रह्म-चुन ग्रंथ में सम्प्रदायिक व्यावहारिक वाचन किया। यह पर सार समाप्ति जो जात है कि ब्रह्म पूत पर वमान-वमान आदर्शों ने अपनी-अपनी दृष्टि है क्रयां भाषा अनुसार जिसे है। यह जाति वमान-वमान वेदान्त सभी अन्तिम में अर्थ है।

प्रसुक्त आधारों में दर्शन का परिभाषाभीतता दर्शन के प्रकारों पर व्याख्याति विचार किया गया है तथापि वृक्ष-वाचक में निरुपित वेदान्त के तत्त्वों की निरुपण के लिए यह आकर्षक है।

चतुर्व्याय - में यह तत्त्व के हिंदी कृष्ण-वाचक में निरुपित वेदान्त के तत्त्वों पर विचार किया गया है। पूर्वाख, नववाद, कृष्णवाद; परा-वाद, कृष्णवाद, वृक्ष-वाद, गौड़वाद लगातार और हीत साधन नव जारी कवियों के वृक्ष-वाचक में सम्बन्ध वाले पुरातन-वाचक के तत्त्वों के निरुपण हुआ है।

समुदायशील विश्वास की ब्रह्मवाद भी जमकर है। ब्रह्मवाद है जयप्राय है स्वर्वभुगः: चरितायाय: ब्रह्मवादः। अत्रायाः भवं भगवं सरीर ब्रह्मपूर्ण है। अगल की
उपस्तु हे न है शुद्ध श्रृंगे हे अभिनव गर्गगात्र श्रृंग अधिक गर्गगात्र का निधन दृष्टिम दृष्टिम दिया गया है। गुण ने कुम्भ मना है, यह गुण का अविनत पुष्प है।

दीप कहीं भूति ग्रह है ने जीव ग्रह, गर्गगात्र है। जीव ग्रह का परिणाम ग्रह ने लेखा द्वारे हे लेखा है। यह ब्रह्म का लेखा जगत जगत के लेखा जगत है।

कल ब्रह्म जगत ब्रह्म तो ब्रह्म पुनः। कल्याण के जो जगत जगत में समा जय है ब्रह्म हे जीव जगत ब्रह्म जगत अने उदार में समी जय है। जगत ब्रह्म का अवर है, पर लेखा अवर शुद्ध उदार है जगत ब्रह्म है।

प्रकाशित भाषान्वित: ब्रम्हा मार्याभ्रात।

लेखार्थलाली उलौती प्रकाशित वर्णित।

- प्रकाशितलाली निबन्ध:

अर्थम ने कवियों ने लिखा है शुद्ध श्रृंगे उदास के उपर्युक्त तत्त्व हे निरुपित है। धूर ने ब्रह्म हे जीव जगत ब्रह्म विश्व भूति परिणाम है। जो वाक्य हे जीव जगत ब्रह्म द्वारा नन्दिवाद है। जौरे ने वाक्य हे जीव जगत ब्रह्म द्वारा नन्दिवाद है और पुनः। जौरे ने लिखा है जीव जगत ब्रह्म द्वारा नन्दिवाद है और पुनः।

पुरुष अध्याय - मे कर्मचे तर दृष्टि लूह कवियों के काव्य में वेदान्त विश्वय पर विचार किया गया है। प्रकाशित अध्याय में नीर्माण, शिलाल, भारतेन्दु दर्शक, बाबू भगवानदास लक्ष्य, भारतेन्दु दर्शक विश्वय का लूह कवियों के लिखा में जौरे वेदान्त के तत्त्व निरुपित है है, उन पर विचार किया गया है।
मीरा के पद ताहित में भक्ति के साथ दर्शन का बड़ा ही उलटम मान-मानकों लोग हुए हैं एवं सुन्दर दृष्टि द्वारा विचार करने पर यह भी साध सी हो जाता है कि प्रयामावश्यक मीरा भक्ति थीं। उन ग्राम पौराणिक राजा जीवन में सिखा रहना चाहती थी। उन्होंने सबसे प्रथम विचार की और यह प्रकार मीरा की भक्ति के साथ प्रयामावश्यक में वर्तमान होना रहा। मीरा कुछ है जानने नाकारी, आत्मकर्मी, भोग लगानी स्थापित। पर जैसा कि पहले समय में जीवन ने दिखाया है कि दर्शन भक्ति का ज्ञान जीवन है। मीरा के पदों में भी वह दर्शन की ही अतिम कल्याण में देखते है। गुजरात के वालीमध्य, नारी पैहाड़ प्रयामावश्यक में भक्त थे पर आत्म में जे जीतनी ही गए। मीरा की प्रयामावश्यक में भक्त रहीं, सहीपालिका रहीं पर आत्म में मीरा के निराकार गोपाल अवसरों की रही बो गए, निराकार गुजरात ही गए। मीरा के दर्शन में तिती के ही नहीं, तितीय प्रश्न के गुजरात के लारक भी ने भी प्रकाश दिखा है। पर मीरा की जीवन का प्रतिवेदन स्थिति पर दिखी का भी मानती नहीं गयी है। सच्ची मीरा की गिरावट गोपाल की ही नांदते रहे, पर वास्तव में ती मीरा के चरम आराध्य अवसरों की बो गई थी। जैसे "सुन्दर ही पुराणी सगर थे जिन्हें गयर तो सगर ही गयर, यैंटे ही मीरा आने चरम काँटों में गुजर ही गयर। बो अवसरों की बो गयर। 'गुजरात सर्व उपाध्याय जोधी जीती' गुजरात का ताल है। जब साधक एवं गुजरात एवं पर हो बी गए, वही 'उपाध्याय' है, भोग है। जी भक्त मुख होता है वायु, फिदी जीवन, फिदी जीवन के चंद्र में जीतत नहीं होता है, प्रायः वह जीतत जीतत । गुजरात चर्च में भक्त है। दशाचित्र एवं अभालिका आय जीवन और जीवन जीवन के जीवन जीवन में जीवन जीवन है ही जीतत है। इसी वजन जात्र भक्ति के उदाहरण मिलते हैं। मीरा और नारी पैहाड़ ये दो तीर्थ दस्तक है दो। पूरा, लुभन जैसे भक्त की भक्ति का उद्देश्य ध्यान तक नहीं पहुंच पात, स्वर जात्र गुजर है। जैसे सहीपालिका एवं सामना पद दोनों दृष्टियों में भक्त हैं एवं आराध्यों में जीतत हैं। जैसे जात्र जीवन और जीवन जीवन के लिए जीवन जीवन है ही जीवन जीवन है। न पूरा उपक्रम अतिशय कर जीवन और न तुलसी की। पूरा दशाचित्र दृष्टि से गुजरात में उदाहरण संबंध
ये तो धार्मिक पाप या भक्ति पाप की दृष्टि से वे शुद्धी संप्रदाय से लेकर वे नाम का प्रभाव तुलना का संदर्भ विभिन्न क्षेत्रों के स्थान है तथा राम भक्ति उनकी दास्य भाव की दृष्टि में ग्रास्य है।

मेरे वे अति अधिक अत्यधिकता धार्मिक विभिन्न धार्मिक पुस्तकों में धार्मिक रसायन के 'उद्घातक' का भी महत्वपूर्ण भाव है। क्यों भी शुद्धी विभिन्न, अति अति विभिन्न, योगार्थ अर्थात् सभी भी मुख्य: तन्त्री व्यास वे धार्मिक निष्प्रिय नहीं है। उद्घातक शास्त्री के वे भ्रष्ट शास्त्र का उपदेश देते हैं। वे धार्मिक विभिन्न का साधन का प्रभाव करते हैं। गीतिकार उद्घातक के धार्मिक खत की माननी को तेवर मन नहीं है। उद्घातक' में निष्प्रिय व्य का संयुक्त गीत की भक्ति से भाव के लक्षण तथा भक्ति के व्याख्या है।

भारतेन्दु बच्चा संस्कार के बाद में भी वेदान्त के भाव निष्प्रिय हुए हैं। भारतेन्दु बच्चा कहीं निर्णयक प्रकार है तो वहें वे शुभायात्रा वेदान्त के लक्षण अपने पहुँचने के पीछे है।

मैथिलीशास्त्री गुण ज्ञानिक युग के वहुवर्ष प्रतिभागिन रामभक्ति के वर है। वे मुख्य: राम के भक्त हैं। 'राजेन्द्र' उनका रामभक्ति से संबंध भक्ति है। पर उनके 'उद्घात' में वेदान्त के संबंध भाव निष्प्रिय हुए हैं। ज्ञानिक हिंदी तुलनात्मक लिखितों में 'ज्ञानभक्ति' के महत्त्व ज्ञानभक्ति ज्ञान का भी अन्य महत्त्व है। हिंदी भक्ति में वाद-विवाद के लक्षण भी है।

पाथ अध्याय – मे हिंदीका प्रश्न के हिंदी तुलनात्मक राम भक्ति प्रश्न पर विचार किया गया है। ये ही हिंदी राम भक्ति लिखित है तुलसी ले भक्ति गीत भक्ति हैं, जो अपने ही राम भक्ति भाव के संबंध कव्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। तुलसी की पढ़ जाती है वे बाद प्रकृति
द्यायाम का दूसरा श्रवण "पशुक रक्त" है। यह भगवान वहीं ती के भी अतिशय सत्स्वादन नहीं। द्यायाम की छवी अधिक विशेषता यह है कि उन्होंने शुद्धदृष्टि श्रद्धांजलि करके द्यायाम श्रवण के लिए "पुर्ण रक्त पद रक्त"। द्यायाम की एक विशेषता और है। यह अभावी श्रद्धांजलि में शरीर पुक्किलित के तत्वों का वास्तविक शैली में निरूपण किया है। यह प्रभाव का कार्य विशेष भी है। क्षण-क्षण द्यायाम श्रवण नहीं हुआ है। इस क्षेत्र में द्यायाम अविश्वसनीय है, अत्यावश्यक है। जब भिन्न भिन्न नमूने प्रस्तुत करके द्यायाम के श्रवण में शुद्धदृष्टि तत्त्व के लिए "पुर्ण रक्त पद रक्त" है। द्यायाम के श्रवण के लिए वह वास्तव में वह ध्रुव और ध्रुव जीवन का विभाजन है, जिसका तत्त्व, जिसका तत्त्व श्रवण में प्रभाव से निरूपण किया है। यह भिन्न भिन्न नमूने के लिए द्यायाम की तरह उच्च धैर्यों के लिए मान्य जाते हैं। भिन्न भिन्न नमूने के लिए "पुर्ण रक्त पद रक्त" है।
प्रणाम अन्यथा - उपरेषो करै। कर्म व निरुक्त प्रकृति की
उपलब्धियों का श्रीप में मुर्गियांन प्रकृत
किया गया है।

व्रजम मे प्रति मेरी विनाश कैसे चूही उपरल हुई? श्चिमी कुमार-धर्म मे तेरा विषय पर मैंने अना मन वेदिता को किया? क्यों में अपने पृथ्विव पिता पृथ्वीनारायण कार्त्तिक माता विद्यालय मे धर्म विद्वान के नम् क्रमश ॐ व्रज कुमार कार्त्तिक मे आत्मनाय बदई या पूरे मेरे गुरुवर ओर प्रभातात आगे की ग्रेना हुई? इसे ने प्रति करता है कि कर बारे के क्रम आत्मनाय धर्म ग्रेना े गोपी मे धारणा सागर की यात्रा, पर वरन का यात्रा, प्रयत्न किया है। यह अलग हुई या और विश्व का निष्ठा मेरी हो जा जा बाबा है। वेदांत मूर्ख, आत्म-वाच मे वांतीत भावना े जीवन वातावरण करने वाले पृथ्वी सहूर बाबा को भी मे भें पूरा सकती है। मे पृथ्वी सहूर भावना दो भ्रमणों मे जलाना है।

मेरी धर्म अर्थ मे गुजरात ज्ञानीन् िती प्राप्त, गुजरात विद्यापीठ प्राप्त, धार्मिक राज्य, आदर्श राज्य ग्राम ग्राम व देश के पावनों मे पुलियां की समाजता मिली है। मे नने प्रति आधार वात कार्य है।

धर्मकार्य की धार्मिक भावना गाढ़ी स्थानम् के आदर्श अन्यथा प्राप्त
1008 परम पृथ्वी जीवन प्राण कामोक्ति के पुल्लगीवनायेकोंर धर्म मे धार्मिक भावना गाढ़ी के आवार्ती के पुल्लगीवनायेकों। धार्मिक राज्य पूर्ण धर्म धार्मिक भावना गाढ़ी के आवार्ती के पुल्लगीवनायेकोंर धार्मिक भावना गाढ़ी के आवार्ती के पुल्लगीवनायेकों। धार्मिक भावना गाढ़ी के आवार्ती के पुल्लगीवनायेकों।
की ब्याख्या है प्रादेशिक बात दूर कि आपकी की सार्थकता अनुसन्धान की शिक्षा में मुझे उल्लेख करता है प्रति के 70 पर अग्रें बढ़ाने का अवसर मिले।

विभिन्न 'शीक्षामिलान आदर्श विभिन्न' के तरल के में कहाँ मुझे सबसे सबसे की सार्थकता दर्शाता है यह गुरू तथा हसी विद्या विश्वास के प्राधान्य गुरू-धारा प्रभाव जीते के निर्देश में मैं यह शीघ्र-कार्य विश्वास किया है।

मैं 'शीक्षामिलान आदर्श विभिन्न' के प्राथमिक भी निर्देश का कार का भी है, जिनकी समाप्ति पर मुझे प्रेमकार श्री सज्ज की है। बसे संबंध के उपाध्याय और कहिया का भी मैं उपाध्याय मानता हूँ कि मैं यह समय जब वर्ष गुरू में अपने आत्मकोश से। शीघ्रता के लिए पुलिश में विभिन्न तरीके बनाता है 'शीक्षामिलान आदर्श विभिन्न' के पुलिश भाष्य की गुरू-धारा तार की भी मैं श्री हूँ कि आपने मुझे मानक के लिए वर्ष गुरू विश्वास प्रदान की। साथ ही यह विद्या विश्वास के लग सी प्राधान्य की भी वृद्धि हूँ कि अगरविवेक वर्ष ही हमें गुरू-धारा के आत्मकोश के भी 70 इंच तथा जीवन शीघ्र-कार का है। वै हसी जीते के प्रति भी अपनी वृद्धि जापन करती हूँ कि अपने अंतिम रूप लेकर रुपरे दार्शन किया।

दिन 7/2/65
(राजकीय प्राधिक दिन)
निदि होति तथा जीवन संकल्प
2/8/75, विमान
समय वर्ष 9, मास 6, दिन 10

लोदिय पराधिक